B-2
L-4
Ancient India

सिंधु घाटी सभ्यता

इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता, कांस्य युगीन सभ्यता और घग्गर-हाकरा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।

* सिंधु घाटी सभ्यता को यह नाम इसके अधिकतर स्थलों के सिंधु नदी क्षेत्र में पाये जाने के कारण मिला है।
* सिंधु घाटी सभ्यता के तहत सबसे पहले खोजा गया स्थल हड़प्पा होने के कारण इस सभ्यता को <u>हड़प्पा सभ्यता</u> भी कहा गया।
* कांसे की सर्वाधिक वस्तुएं मिलने के कारण इसे <u>कांस्ययुगीन सभ्यता</u> का नाम दिया गया।
* बाद में सिंधु सभ्यता के स्थलों का फैलाव सरस्वती नदी तक होने के कारण इसे <u>घग्गर-हाकरा सभ्यता</u> का नाम भी दिया गया।

भौगोलिक विस्तार

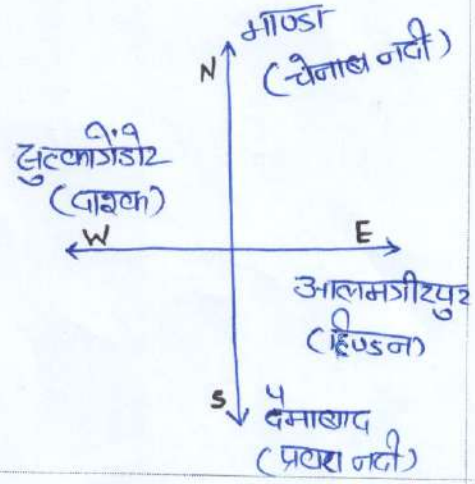

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES

सिंधु घाटी सभ्यता का उद्भव

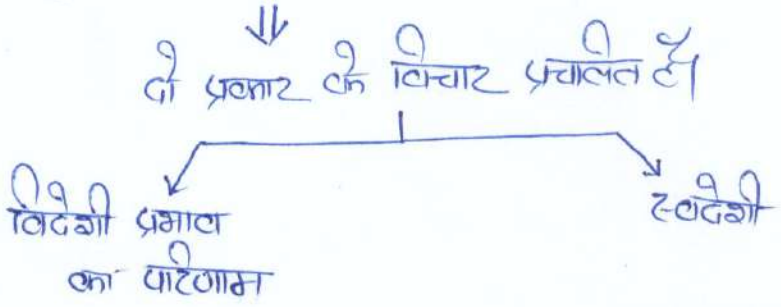

विदेशी प्रभाव : कुछ विद्वानों के अनुसार, सिंधु घाटी सभ्यता सुमेरियन सभ्यता से प्रभावित थी। इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए उनके द्वारा नगरीकरण, ईंटों की संरचना व लिपि में समानता जैसे साक्ष्य प्रस्तुत किए गए।

परन्तु तथ्यों के सूक्ष्म विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ सिंधु घाटी सभ्यता में नगरीकरण नियोजित रूप में था, वहीं सुमेरियन सभ्यता में नगरीकरण नियोजित रूप में नहीं था।

इसी प्रकार जहाँ सिंधु घाटी सभ्यता में पकी ईंटों का प्रयोग होता था, वहीं सुमेरियन सभ्यता में कच्ची ईंटों का प्रयोग होता था।

दोनों सभ्यताओं की लिपियों में भी अंतर देखा गया। जहाँ सिंधु सभ्यता की लिपि चित्रात्मक थी, वहीं सुमेरियन सभ्यता की लिपि सर्पिलाकार (Zig-Zag) थी।

उपरोक्त असमानताओं के आधार पर सिंधु सभ्यता के उद्भव में विदेशी प्रभाव के सिद्धांत को अस्वीकृत किया गया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

विदेशी प्रभाव: आरंभिक पशुपालक और ग्रामीण समुदायों ने सिंधु सभ्यता के उदय की पृष्ठभूमि तैयार की, जो कि उसे नवपाषाणकाल से ताम्रपाषाण काल तक की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के विकास के रूप में देखने को मिलती है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सिन्धु सभ्यता के निर्माता

सिन्धु सभ्यता के उत्खनन से हमें चार प्रजाति समूह के अवशेष मिले हैं।

1> Proto Australoid (प्रोटो आस्ट्रेलाइड)
2> Mediterranean (भूमध्य सागरीय)
3> Alpine (अल्पाइन)
4> Mongoloid (मंगोलाइड)

इन सभी प्रजातियों में भूमध्य सागरीय प्रजाति के कंकालों के साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता में सबसे अधिक मिले हैं। अतः भूमध्य सागरीय प्रजाति को सिन्धु सभ्यता के निर्माता के रूप में जाना जाता है।

सिन्धु सभ्यता का काल निर्धारण

* प्रारंभिक हड़प्पाकाल: ग्रामीण सभ्यता, कच्ची ईंटों का प्रयोग
  - प्रमुख फसल - गेहूं, जौ
* परिपक्व हड़प्पाकाल (2550 ई.पू. - 2350 ई.पू.):-
  * नगरीय सभ्यता, पक्की ईंटों का प्रयोग
  * प्रमुख फसल - गेहूं, जौ, कपास, मटर, सरसों
  * लिपि का प्रयोग
  * व्यापार प्रारंभ
  * मुहरों का प्रयोग

* उत्तर हड़प्पाकाल (2350 ई.पू - 1750 ई.पू.):-
  * व्यापारिक गतिविधियों में कमी
  * नगरीकरण में कमी
  * मुहरों में कमी

नगर नियोजन

* हड़प्पाकालीन नगर नियोजन आयताकार ग्रिड पैटर्न पर आधारित थी।
* सड़के एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी।

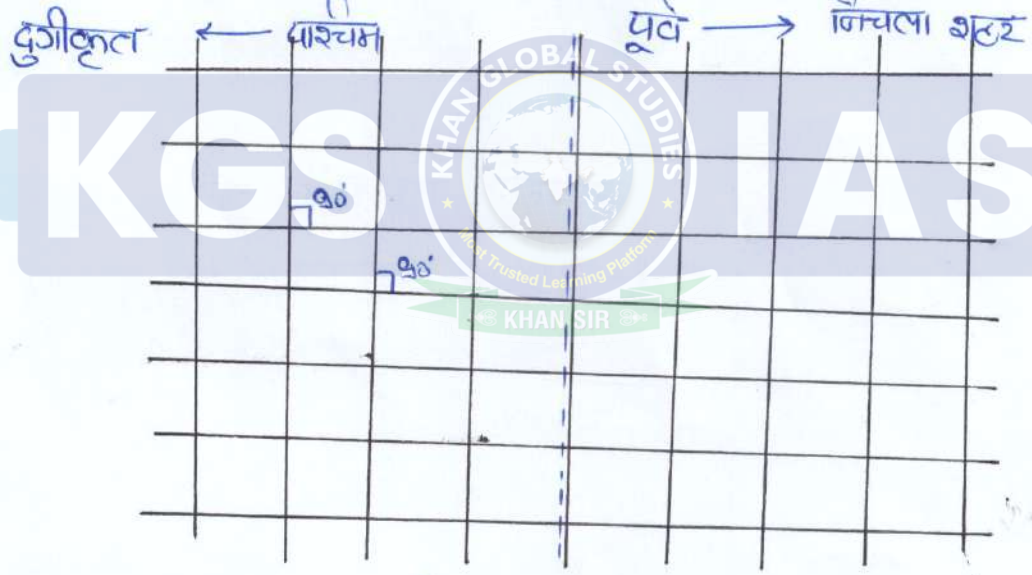

* पूरा नगर दो भागों में विभाजित था। पूर्व भाग निचला शहर कहलाता था जबकि पश्चिम में शहर एक ऊंचे चबूतरे पर स्थित था, जिसकी चारो ओर से घेराबंदी (दुर्गीकृत) की गई थी।

KGS IAS

* कालीबंगन और सुरकोटदा में निचले शहर की भी घेराबंदी की गई है।
* धौलावीरा से हमें नगर के तीन भागों में विभाजन का साक्ष्य मिलता है।
* नगर निर्माण में कहीं भी पत्थर का प्रयोग नहीं किया गया है जो कि समकालीन सभ्यताओं में अनूठा है।
* महत्वपूर्ण भवन जैसे- अन्नागार, स्नानागार आदि दुर्गीकृत नगर में होते थे।
* नगर नियोजन से यह प्रतीत होता है कि पूर्व दिशा में आम आदमी रहते थे, जबकि पश्चिम में उच्च वर्ग के लोग रहते थे। अर्थात वर्ग विभाजन हड़प्पा सभ्यता में विद्यमान था।
* मुख्य सड़क प्रथम सड़क कहलाती थी जो कि उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत थी।
* सिंधु सभ्यता की ईंटें L आकार की थी।
* घर सामान्यतः एक मंजिला थे, परन्तु कहीं-कहीं पर हमें द्विमंजिला और तीन मंजिला भवन के भी साक्ष्य मिलते हैं।
* सामान्यतः घरों में रोशनदान होते थे, परन्तु खिड़कियों का अभाव है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* सामान्यत: सिंधु सभ्यता के मकान सादे होते थे अर्थात मकानो मे अलंकरण नहीं था। घरों के दरवाजे मुख्य सडक पर न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे। इससे सैन्धव सभ्यता के लोगों की स्वच्छता के प्रति जागरूकता दिखायी देती है।

* नगर नियोजन से सैन्धव सभ्यता के लोगो के उत्तम जल प्रबंधन का साक्ष्य मिलता है। प्रत्येक घर की नालियां मुख्य सडक के मेनहोल से जुडी होती थी। जल के रिसाव को रोकने के लिए बिटुमिनस और जिप्सम का प्रयोग किया है।

* नगर नियोजन मे मंदिर के साक्ष्य का अभाव है।

* सैन्धव सभ्यता में हमे तीन प्रकार के भवनों के साक्ष्य मिलते है।
  (1) आवासीय भवन
  (2) विशाल भवन
  (3) सार्वजनिक भवन

सामाजिक जीवन

* नगर नियोजन से पूर्व एवं पश्चिम विभाजन का साक्ष्य मिलता है।
  अत: यह कहा जा सकता है कि समाज मे वर्ग विभाजन था।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Trusted Learning Place KHAN SIR

* समाज में व्यापारी, कृषक, मजदूर, शिल्पी, कुंभकार एवं पुरोहित उपस्थित थे।

* किसी भी प्रकार के राजा/राजतंत्र का साक्ष्य नहीं चूंकि यह सभ्यता व्यापार-वाणिज्य का परिणाम थी अतः यह कहना ज्यादा उचित होगा कि संभवतः व्यापारी वर्ग का प्रभुत्व रहा होगा।

* चूंकि मातृदेवी की मूर्तियां अत्यधिक संख्या मे मिली हैं अतः समाज मातृ सत्तात्मक रहा होगा।

* परिवार समाज की मूलभूत इकाई थी।

* मनोरंजन के साधन:- पासा, शिकार, शतरंज, मुर्गा लड़ाना, नृत्य-संगीत, शतरंज, मिट्टी के टेराकोटा (पकी ईंट के खिलौने जैसे- सिर हिलाता हुआ खिलौना)

* आभूषण: वर्तमान मे प्रयोग होने वाले सभी आभूषण सिंधु सभ्यता मे मौजूद थे। (अपवाद- सोने की अंगूठी)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR